Lecture-4
Topic-Main Features of Fascism Idealogy
Degree-III (Hons.) Paper-8D

Date-17-6-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

फासीवाद :-

प्रजातंत्र का विरोधी :- फासीवाद लोकतंत्र का घोर विरोधी है। उसकी दृष्टि में प्रजातंत्र मूर्ख व भ्रष्ट व्यक्तियों का शासन है। उनका कहना है कि लोकतंत्र एक मरणासन्न शव है जो बुरी तरह सड़ चुका है। उनकी नजर में संसद बातों की दुकान है। मुसोलिनी ने कहा है - लोकतंत्र थोड़े-थोड़े समय के बाद चुनावों के समय लोगों को झूठी सम्प्रभुता का आश्वासन देने का साधन है। मुसोलिनी ने तत्कालीन इटली में लोकतंत्र की दुर्दशा के बारे में कहा है- इटली को संसद एक जहरीला कोड़ा है,

यह समूचे राष्ट्र के रक्त को दूषित कर रहा है, अतः इनका तुरंत नाश होना चाहिए।"
फासीवादियों की दृष्टि में प्रजातंत्र काल्पनिक व अव्यावहारिक शासन व्यवस्था है। उनका कहना है कि लोकतंत्र समानता व बहुमत के सिद्धांत पर आधारित है। प्रकृति ने सभी को असमान बनाया है तो समानता की बात करना मूर्खता है। इसी प्रकार शासन करने के गुण थोड़े व्यक्तियों में ही होते हैं, इसलिए लोकतंत्र मूर्खों का शासन है। फासीवादी लोकतंत्र के स्थान पर एक व्यक्ति की तानाशाही का समर्थन करते हैं। उनका नारा है- "विश्वास रखो, आज्ञा पालन करो और लड़ो!" उनका मानना है कि लोकतंत्र पूंजीपतियों का शासन है। इसलिए वह कभी भी आम व्यक्ति का भला नहीं कर सकता।

(7) उदारवाद का विरोध :- उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों पर

जोर देता है। कालीवादी अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यों पर अधिक बल देते हैं। उनका कहना है कि व्यक्ति की सच्ची स्वतंत्रता तो राज्य के आदेशों का पालन करने और राष्ट्र-भक्ति में है। उदारवादियों द्वारा लोकतंत्रीय शासन प्रणाली का समर्थन किए जाने का भी कालीवादी विरोध करते हैं। उनका कहना है कि शासन की बागडोर योग्य व्यक्तियों के हाथों में ही ठीक रहती है। जनता जनता को शासन से दूर रहने में ही भलाई है।

इसी तरह कालीवादी आर्थिक उदारीकरण को राष्ट्र हित में सही नहीं मानते। इससे शोषण व आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिलता है। इसलिए आर्थिक साधन भी राज्य के नियंत्रण में ही रहने चाहिए। इस तरह कालीवादी उदारवाद के विरोधी हैं।

CHAPTER CONTINUES....